Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 SHISRRJ | Volume 5 | Issue 6 | ISSN : 2581- 6306

संस्कृत वाङ्मय में आख्यान और उपाख्यान परंपरा पर विचार-विमर्श

अखिलानन्द उपाध्याय

शोध छात्र, विभाग संस्कृत, डॉ राम मनोहर लोहिया राजकीय महाविद्यालय मुफ्तीगंज, जौनपुर,

विश्वविद्यालय–वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर, उत्तर प्रदेश।

शोधसारांश– अपाला आत्रेयी एवं घोषा का उपाख्यान भारतीय नारी शक्ति की चारित्रिक उदारता एवं एवं तेजोरूपता का उदाहरण है। कतिपय उपाख्यानों का उदय मनुष्य को चारित्रिक एवं नैतिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के लिए भी उपाख्यानों की योजना की गई प्रतीत होती है। तदनंतर प्रभृति महाकाव्यों में उपाख्यानों की विवेचना उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों के अतिरिक्त उसके मूल कथानक को सरस रोचक आदि बनाना भी रहा है ।वास्तविक रूप में संस्कृत वांग्मय में उपाख्यानों के लेखन के यही किंचित उद्देश्य रहे हैं।

मुख्य शब्द– संस्कृत, वाङ्मय, आख्यान, उपाख्यान, नारी, शक्ति, नैतिक।

संस्कृत वाङ्मय विश्व का अत्यंत विशाल प्राचीन एवं समृद्ध वाङ्मय है। इसकी प्राचीनता का अन्वेषण करने पर ज्ञात होता है कि वर्तमान काल में संस्कृत वाङ्मय के प्राचीन एवं प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद के समतुल्य कोई भी ग्रंथ नहीं है ।इसकी विपुलता एवं विशालकाय समृद्धता का परिचायक है ऋग्वेद, यजुर्वेद सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण ग्रंथ, आदरणीय ग्रंथ, उपनिषद रामायण एवं महाभारत आदि। संस्कृत वाङ्मय के इन पवित्र ग्रंथों के ज्ञान रूप गंगा में स्नान करके" सर्वजन हिताय एवं सर्वजन सुखाय "एवं "वसुधैव कुटुंबकम" जैसे महनीय एवं वैश्विक विचारधाराओं का उद्गम होता है। संस्कृत वांग्मय में आख्यानों एवं उपाख्यानों की परंपरा का सूक्ष्म अवलोकन करे तो ज्ञात होता है कि आख्या नो एवं उपाख्यानों का मूल बीज वैदिक वाङ्मय में ही परिलक्षित होता है। ऋग्वेद के नाराशंसी उपाख्यानों एवं दान स्तुतियों तथा दसराज युद्ध में ऐसे अनेक युद्ध आदि के प्रसंग में ऐसे छोटे बड़े अनेक इतिवृत्त प्राप्त होते हैं जिनमें आख्या नो एवं उपाख्यानों का मूल दृष्टिगोचर होता है।

आख्यान शब्द के अर्थ पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि आख्यान शब्द आ उपसर्ग पूर्वक ख्या धातु से ल्यूट प्रत्यय करने पर आख्यान शब्द की निर्मिती होती है। जिसके निम्न अर्थ होते हैं बोलना, घोषणा करना ,समाचार, किसी प्राचीन कथा अथवा कहानी की ओर निर्देश करना,कथा कहानी विशेष रूप से काल्पनिक या पौराणिक आदि अर्थ होते हैं। प्रसंगानुकूल आख्यान शब्द का अर्थ होगा पौराणिक कथा ,कहानी। वैदिक ग्रंथों का विहंगावलोकन से

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

ज्ञात होता है कि नाराशंसी आख्यानों एवं दानस्तुतियों के प्रसंग में लघु राजाओं से संबंधित इतिवृत्त की तरफ संकेत प्राप्त होता है जिसमें अनेकानेक आख्यान एवं उपाख्यानों का मूल अस्तित्व परिलक्षित होता है ।इसी पंक्ति में उपाख्यान शब्द के शाब्दिक अर्थ की मीमांसा करें तो ज्ञात होता है कि उप और आ उपसर्ग पूर्वक ख्या धातु से ल्यूट प्रत्यय करने पर उपाख्यान शब्द की निर्मिती होती है ।इस प्रकार संस्कृत वाङ्मय में उपाख्यान शब्द का जो स्वरूप प्राप्त होता है उस आधार पर यदि इसे परिभाषित करने का प्रयास किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि जो कथानक आकार में वृहद अथवा विशाल हो अथवा मूल कथा हो उसे आख्यान के रूप में परिभाषित किया जा सकता है एवं जो कथानक आख्यान की अपेक्षाकृत अत्यंत अल्प हो उसे उपाख्यान। अन्य शब्दों में कहें तो कह सकते हैं कि जो मुलकथावस्तु होती है वह आख्यान एवं मूल कथावस्तु में नवीनता और रोचकता आदि लाने के लिए जो प्रासंगिक इतिवृत्तों की योजना होती है वही उपाख्यान कहलाते हैं ।प्रमाण स्वरूप महर्षि बाल्मीकि रामायण की मूल कथावस्तु रामायण की जो मूल राम कथा है उसे आख्यान कहेंगे एवं प्रसंगानुकूल इसमें वर्णित ऋष्यश्रृङ्ग उपाख्यान, गंगावतरण उपाख्यान ,वशिष्ठ विश्वामित्र से परशुराम ,अगस्त्य उपाख्यान कहलायेंगे।

पाश्चात्य वाङ्मय पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है कि अंग्रेजी साहित्य के अंतर्गत उपाख्यान के लिए एपिसोड शब्द का प्रयोग मिलता है जिसकी मूल रूप से उत्पत्ति ग्रीक भाषा के एपिसोडोस से मानी जाती है। Every man's Encyclopaedia में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है कि Episode को ग्रीक भाषा में Episodos कहते हैं। जिसका अर्थ है प्रवेश उपरांत घटनाओं की स्वाभाविक धारा में किसी व्यक्ति विशेष अथवा लोगों के जीवन की वह घटना जो मुख्यधारा में विशेष महत्वपूर्ण नहीं होती है, उसे एपिसोड अर्थात उपाख्यान कहा गया है ।अरस्तु अपने पॉलिटिक्स नामक ग्रंथ में उपाख्यानों को समूह गानों के मध्य की घटना बताते हैं। जो तारतम्यता में एक प्रकार का व्यवधान है । A Dictionary of Literary terms के अनुसार किसी बृहत्कथा के अंतर्गत घटित घटना एपिसोड अर्थात उपाख्यान होती है। Webster's Third International Dictionary के अंतर्गत उपाख्यान हेतु निम्नलिखित बिंदुओं को अंकित किया गया है-

1- किसी नाटक या साहित्यिक रचना में संक्षिप्त कार्य।

2- कोई विकसित स्थिति जो कथा से सम्बद्ध होते हुए भी पृथक है।

3- रेडियो अथवा टेलीविजन में सीरियल प्रस्तुतीकरण का एक भाग।

इस प्रकार उपर्युक्त विवेचनात्मक अध्ययन से स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों साहित्य में उपाख्यान एपिसोड का प्राय: एक जैसा ही स्वरूप उपलब्ध होता है। संस्कृत वांग्मय में उपाख्यान परंपरा का आरंभ वैदिक काल से ही होता है यह सर्वमान्य है ।ऋग्वेद के विभिन्न संवाद सूक्तों में अनेकानेक उपाख्यानों का स्वरूप

दृष्टिगोचर होता है। जिनमें शुन: शेप उपाख्यान का ,अगस्त्य और लोपामुद्रा वशिष्ठ और विश्वामित्र अग्नि के जन्म का आदि का उपाख्यान, सुदास उपाख्यान, नहुषोपाख्यान, अपाला आत्रेयी और कृशाश्व का उपाख्यान, पुरुरवा उर्वशी, नचिकेत उपाख्यान ,घोष आदि का उपाख्यान उपलब्ध होते हैं ।इनके अतिरिक्त इन्द्रवृत्र उपाख्यान,दीर्घतमा उपाख्यान आदि भी विशेष रूप से उपलब्ध होते हैं। इस प्रकार संस्कृत वाङ्मय में उपाख्यान परंपरा का आरंभ ऋग्वेद से होता है जिसका स्पष्ट स्वरूप वेदों के व्याख्यान ग्रंथों में दृष्टिगोचर होता है ।तदनंतर आरण्यक, उपनिषद वेदांग, पुराण, रामायण, महाभारत आदि विभिन्न महाकाव्यों में इसका विकसित रूप देखने को मिलता है।

वैदिक संहिताओं के पश्चात ब्राह्मण ग्रंथों में याज्ञिक आयोजनों के शुभ अवसर पर गुढ़ अथवा रहस्यात्मक तत्वों की सरलतम रूप से व्याख्या करने हेतु उपाख्यानों की कल्पना की जाती रही है। एतत् कारणों से ब्राह्मण ग्रंथों में उपाख्यानों का विपुल भंडार प्राप्त होता है। शतपथ ब्राह्मण में शुन:शेप उपाख्यान, पुरुरवा उर्वशी उपाख्यान, दुष्यंत शकुंतला उपाख्यान, जल प्लावन अथवा मत्स्यावतार उपाख्यान, प्रजापति के वराह रूप धारण करने का उपाख्यान आदि विशेष रूप से प्रसिद्ध उपाख्यानों का उल्लेख है।

दार्शनिक तत्वों की सरलतम और स्पष्ट व्याख्या हेतु उपनिषदों में भी उपाख्यानों का वर्णन हुआ है। छांदोग्य उपनिषद में उपाख्यान सत्यकाम जाबालि उपाख्यान ,प्रवाहण जाबाली तथा श्वेतकेतु आरुण्य का उपाख्यान, आरुणि श्वेतकेतु का उपाख्यान, सनत कुमार नारद उपाख्यान आदि अत्यंत प्रसिद्ध उपाख्यान परिलक्षित होते हैं। जनक याज्ञवल्क्य आख्यान ,कात्यायन मैत्रेयी उपाख्यान, प्रवाहण जाबाली और श्वेतकेतु आरुण्य उपाख्यान आदि जैसे उपाख्यान बृहदारण्यक उपनिषद में दृष्टिगोचर होते हैं। कृष्ण यजुर्वेद के कठोपनिषद में वर्णित नचिकेतोपाख्यान तो अत्यंत एवं सर्वत्र प्रसिद्ध है। इस प्रकार छांदोग्य ,बृहदारण्यक केन, कठ आदि उपनिषदों में उपाख्यानों की समृद्धशाली परंपरा प्राप्त होती है ।

उपनिषदों के पश्चात पुराणों में उपाख्यानों की समृद्ध परंपरा दृष्टिगोचर होती है। मनोरंजन पूर्वक यथार्थ तत्वों का सरलता से जन सामान्य को भी बोध कराने के लिए पुराणों में वृहद स्तर पर उपाख्यान अस्तित्व में आते हैं ।यथा नचिकेता उपाख्यान ,पुरुरवा उर्वशी सरमा–पणि, मत्स्य अवतार को रूपा ज्ञान आदि प्रसिद्ध उपाख्यान भिन्न–भिन्न पुराणों में न्यूनाधिक विकसित रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। भारत की पावन धरा की यह विशेषता रही है कि ऋषि–मुनियों ने गुढ़ दार्शनिक तथा आध्यात्मिक रहस्यों को सरल विधि से समझाने के लिए कथा कथा अथवा उपाख्यानों का आश्रय लेते थे।संभवत इन्हीं अन्य कारणों से वेदो, ब्राह्मण ग्रंथों, उपनिषदों, पुराणों आदि में उपाख्यानों का सहयोग प्राप्त किया जाता था।किंचित उपाख्यानों की योजना देवताओं का मानवीकरण करके जीवलोक से संबंध स्थापित करने तथा मानव समाज के कल्याण एवं लोकमंगल के लिए की गई है। कतिपय उपाख्यानों की योजना धार्मिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की स्थापना करने के उद्देश्य से की गई है। यथा– श्यावाश्व उपाख्यान के

द्वारा इस सामाजिक मूल्यों को समझाने का प्रयास किया गया है कि संकल्पित व्यक्ति अपने शुभेच्छा की सिद्धि के लिए की गई तपस्या उसे अपेक्षित परिणाम प्राप्त कराता है। इसके साथ ही यह भी समझाने का प्रयास किया गया है कि साधन संपन्न होते हुए भी किसी मूर्ख व्यक्ति की अपेक्षा बुद्धिमान एवं कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति साधन संपन्न ना होने पर भी पूजनीय होता है।

इसी प्रकार अपाला आत्रेयी एवं घोषा का उपाख्यान भारतीय नारी शक्ति की चारित्रिक उदारता एवं एवं तेजोरूपता का उदाहरण है। कतिपय उपाख्यानों का उदय मनुष्य को चारित्रिक एवं नैतिक दृष्टि से समृद्ध बनाने के लिए भी उपाख्यानों की योजना की गई प्रतीत होती है। तदनंतर प्रभृति महाकाव्यों में उपाख्यानों की विवेचना उपर्युक्त वर्णित उद्देश्यों के अतिरिक्त उसके मूल कथानक को सरस रोचक आदि बनाना भी रहा है ।वास्तविक रूप में संस्कृत वांग्मय में उपाख्यानों के लेखन के यही किंचित उद्देश्य रहे हैं।

द्रष्टव्य स्रोत ग्रंथ सूची -

1- भारतीय अनुशीलन, डॉ मणिलाल पटेल 34-42

2- वैदिक साहित्य और संस्कृति, बलदेव उपाध्याय।

3- ऋग्वेद - 7/18,33,83,95

4- ऋग्वेद- 1/24-26,179

5- ऋग्वेद- 2/12

6- ऋग्वेद- 3/43,53

7- ऋग्वेद- 8/91

8- ऋग्वेद- 10/61,62,86,95,98,108,35

9- ऋग्वेद- 8/19,81

10- ऋग्वेद- 1/140-164

11- A Dictionary of Literary terms: J.A.Cuddon Andre Deutsch limited G.R.S. London.

12- Every man's Encyclopaedia Vol.IV J.M. Dent

13- Webster's Third International Dictionary,Merian Webster.

14- शतपथ ब्राह्मण

15- ऐतरेय ब्राह्मण सप्तम पंचिका अध्याय 33

16- तैत्तिरीय ब्राह्मण- 7/1/5/1

17- तैत्तिरीय ब्राह्मण- 3/11/8

18- छान्दोग्य उपनिषद- अध्याय 1खण्ड 10-11

19- छान्दोग्य उपनिषद- 1/12

20- छान्दोग्य उपनिषद-4/4/8

21- छान्दोग्य उपनिषद- 4/10/15

22- बृहदारण्यक-3,4

23- केनोपनिषद- खण्ड 3,4

24- केनोपनिषद- 2/2/13

25- वायु पुराण

26- भागवत पुराण- 9/14

27- विष्णु पुराण-

28- वराह पुराण- 16/10-39

29- कुर्म पुराण- 1/16/77,78

30- वामन पुराण

31- मूल रामायण,गीता प्रेस गोरखपुर

32- मूल महाभारत- गीता प्रेस गोरखपुर।